SEM-III
Paper-12

* बंगला उपन्यास साहित्य का विकास

बंगला उपन्यास की यात्रा उपन्यासकार प्यारी चाँद मित्र के उपन्यास अलालेर घरेर दुलाल (1858) से प्रारंभ होती है। 1857 ई० में भूदेव मुखोपाध्याय द्वारा बंगला के ऐतिहासिक उपन्यासों का सूत्रपात होता है। इनके दो उपन्यास महत्वपूर्ण हैं — "सफल स्वप्न" और 'अंगुरीय विनिमय'। लेकिन बंगला उपन्यास का पूर्ण एवं मौलिक विकास बंकिमचंद्र के हाथों होता है। इसलिए बंकिमचन्द्र को बंगला उपन्यास का पहला पुरोधा माना जाता है। बंकिमचंद्र के उपन्यास पारिवारिक, सामाजिक, रोमांस, इतिहास सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। इनके उपन्यासों की संख्या चौदह हैं — दुर्गेश नंदिनी, कपाल कुंडला, मृणालिनी, विषवृक्ष, इंदिरा, युगलांगुरीय, राधारानी, चंद्रशेखर, रजनी, कृष्णकांत का विल, राजसिंह, आनन्दमठ, देवी चौधुरानी और सीताराम। बंकिमचन्द्र ने अपने उपन्यासों के द्वारा बंगला गद्य साहित्य को प्रौढ़ रूप देने का प्रयास किया है। पात्र संरचना की दृष्टि से इनके उपन्यासों ने विशेष रूप से प्रभावित किया है।

बंकिमचन्द्र के बाद ऐतिहासिक उपन्यासकारों में रमेशचन्द्र नाम विशेष उल्लेख योग्य है। इन्होंने छः उपन्यासों की रचना की थी — बंगविजेता, माधवी कंकण, महाराष्ट्र जीवन प्रभात, राजपूत जीवन संध्या, संसार और समाज। इसमें से पहले चार ऐतिहासिक और बाद के दो पारिवारिक उपन्यास हैं। इनके उपन्यासों में ऐतिहासिक तथ्यों की ही प्रधानता है। इनके पारिवारिक उपन्यासों का आधार पत्नी जीवन की कहानी है। यही इसके पारिवारिक उपन्यासों की नवीन दिशा है।

बंकिमचन्द्र के बाद जिस असमान्य प्रतिभा का जन्म हुआ वे हैं रविन्द्रनाथ। काव्य, नाटक, लघुगल्प और निबंध लेखन की तरह इन्होंने उपन्यास के क्षेत्र में भी युगांतर ला दिया। रवीन्द्र युग का प्रधान लक्षण है ऐतिहासिक उपन्यासों का लोप और सूक्ष्म मनोविश्लेषणप्रधान वस्तुनिष्ठ उपन्यास रचना का सूत्रपात। रवीन्द्रनाथ के उपन्यासों के नाम हैं — बउ ठकुरानी की हाट, राजर्षि,

'चोखेरबाली', 'नौका डूबी' 'गोरा चतुरंग', 'घरे बाइरे', 'योगायोग', 'शेषेर कविता', 'दुइबोन', 'मालञ्च' और 'चार अध्याय'। उन्होंने साधारण बंगाली जीवन को ही अपने उपन्यासों के कथानक के रूप में चुना और इस साधारण जीवन में व्याप्त अंतर्मुखी चेतना का रसपूर्ण विश्लेषण किया। असाधारण प्रतिभावान रवींद्रनाथ से लेकर अपराजेय कथा शिल्पी शरत्चंद्र के आविर्भाव के मध्यवर्ती कालखण्ड में जो उपन्यासकार हुए उनमें प्रमुख हैं - हरिसाधन मुखोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री, राखालदास बंद्योपाध्याय सुरेन्द्रमोहन भट्टाचार्य, पाँचू कौड़ी दे, हारानचंद्र रक्षित, प्रभात कुमार मुखोपाध्याय इत्यादि।

बंगला उपन्यास साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं शरतचंद्र। इन्होंने बंगालियों के आँसुओं और चिरवेदना को बहुत तीव्रता से अपने उपन्यासों के माध्यम से आकर्षित किया है। इसके द्वारा लिखित लगभग दो दर्जन उपन्यास प्रस्तुत हैं जिनमें प्रमुख हैं - बड़ी दीदी, परिणीता, मंझली दीदी, पल्ली समाज, देवदास, चरित्रहीन श्रीकांत, गृहदाह, अनुराधा सती, परेश इत्यादि। इन्होंने परिचित समाज की सीमा में बँधे मध्यमवर्ग के नर नारियों की जो वेदना अभी तक अलक्षित थी उसे अत्यंत सहानुभूति के साथ अंकित किया। पतिता नारियों को उन्होंने जो सहानुभूति दी, उन्हें जो मानवी का दर्जा दिया यह भी उनका बहुत बड़ा योगदान है।

शरतचन्द्र के समकालीन उपन्यासकारों में हेमेंद्र प्रसाद घोष, सतीशचंद्र चट्टोपाध्याय फणींद्रनाथ पाल, सरोजनाथ घोष के नाम उल्लेखनीय हैं। इस समय के उपन्यासकारों में चारुचंद्र बंद्योपाध्याय का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। इन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास लिखे। परगाछा, दुईतार, मुक्तिस्नान नवटचंद्र, सुरबाँधा अग्निहोत्री आदि उपन्यासों द्वारा असमाजिक प्रेम को सहानुभूति के साथ स्थान देकर प्रगतिशीलता के मुख को खोल दिया। इन्होंने अनेक स्थानों पर नर-नारी के यौन संबंध को विषद रूप में चित्रित करके पूर्व युग के मन के साथ एक गहरे अंतर की सूचना दी। नए युग के अग्रदूत के रूप में इनका नाम स्मरणीय है।

बंगला उपन्यास साहित्य का विकास

आधुनिक काल के उपन्यासकारों में अचिंत्यकुमार सेनगुप्त, बुद्धदेव बसु और प्रबोध कुमार सन्याल का नाम लिया जाता है। अचिंत्य कुमार सेनगुप्त ने वेद और आकस्मिक उपन्यासों के माध्यम से नारी जीवन की कुत्सित और ग्लानियुक्त दिशा का उद्‌घाटन किया है। बुद्धदेव बसु लिखित अकर्मण्य, सानंद, बासर घर आदि महत्वपूर्ण हैं। प्रबोध-कुमार सन्याल ने अग्रगामी, बुद्ध, वनहंसी आदि उपन्यासों के द्वारा नारी समस्याओं पर दृष्टिपात किया है। अत्याधुनिक उपन्यासकारों में शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय, समरेश मजमूदार, सुनील गंगोपाध्याय नवारूण भट्टाचार्य, सुचित्रा भट्टाचार्य, जय गोस्वामी इत्यादि प्रमुख हैं। उच्च वर्ग के साथ-साथ निम्न वर्ग के कृषक, श्रमिक, कुली-मजदूर, किरानी, भिखारी, संथाल, फेरीवाले यहाँ तक कि चोर डकैतों को भी आधुनिक बंगला उपन्यासों की वर्णनीय वस्तु बना लिया गया है। बंगाल उपन्यास आधुनिक काल के प्रचुर वैचित्र्य का अधिकारी हो गया है।

बंगाली उपन्यास का युग 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुआ। पहला रोमांटिक बंगाली उपन्यास बंकिमचन्द्र-चटर्जी की 'दुर्गेशनंदिनी' (1865) है, जबकि सामाजिक यथार्थवाद का पहला बंगाली उपन्यास पैरी-चन्द्र मित्रा का 'अललर घरर दुलाल' (1858) है। हालांकि सर्वसम्मति से युग के अग्रणी उपन्यासकार बंकिम-चन्द्र-चटर्जी थे, जिन्होंने देश को अपना राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' अपने राजनीतिक उपन्यास 'आनन्द मठ' से दिया, जो आज तक बंगाली साहित्य की उत्कृष्ट कृति है। इस शताब्दी में 'दिग्दर्शन' (एक मासिक पत्रिका) और समाचार दर्पण' (एक साप्ताहिक) के रूप में समय-समय पर प्रेस के आगमन को भी देखा गया, दोनों को सेरामपोर मिशनरियों द्वारा प्रकाशित किया गया था। नाटक और साहित्य जिसने भारत में स्वतंत्रता-पूर्व युग के दौरान एक

विशाल नवीकरण देखा। व्यावहारिक रूप से प्रत्येक बंगाली साहित्य शब्द की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहा था, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 19वीं शताब्दी के महान उपन्यासकारों ने आम जन को जागृत करने का कार्य किया है।

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज
आरा